

This question paper contains 1 printed page.

Roll No. :
Unique Paper Code : 12137902
Name of the Paper : Art of Balanced Living
Name of the Course : B.A. (H), DSE, CBCS
Semester : V
Duration : 3 Hours
Maximum Marks : 75

टिप्पणी:

1. इस प्रश्न-पत्र का उत्तर संस्कृत या हिन्दी या अंग्रेजी किसी एक भाषा में दीजिए, परन्तु सभी उत्तरों का माध्यम एक ही होना चाहिए।
2. इस प्रश्नपत्र में कुल 6 प्रश्न हैं। इनमें से किन्हीं 4 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सबके अङ्क समान हैं।

Note:

1. Answers should be written in **Sanskrit** or in **Hindi** or in **English** but the same medium should be used throughout the paper.
2. There are **total 6 questions** in this question paper. **Attempt any 4 questions.** Each question contains equal marks.
1. बृहदारण्यकोपनिषद् के आधार पर श्रवण, मनन एवं निदिध्यासन के स्वरूप का वर्णन कीजिए।
Discuss the nature of Śravaṇa, Manana, and Nididhyāsana on the basis of Bṛhadāraṇyakopaniṣada.
2. याज्ञवल्क्य-मैत्रेयी संवाद में 'पुत्र के प्रयोजन के लिए पुत्र प्रिय नहीं होता' इस उपदेश के द्वारा आत्मतत्त्व के किस रहस्य को समझाया गया है? स्पष्ट कीजिए।
In the Yajnavalkya-Maitreya dialogue, which secret of self-realization was explained through the sermon 'Son is not dear for the purpose of son' Explain it.
3. 'नियतं कुरु कर्मम्' इस पंक्ति के आशय को गीता के तृतीय अध्याय के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
Explain the meaning of this line '*Niyatam Kuru Karmam*' on the basis of third chapter of Gita.

4. गीता के ज्ञान-योग अध्याय के आधार पर चार प्रकार के भक्तों की विशेषताओं का वर्णन करते हुए जीवन में भक्ति के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।

Explain the importance of Bhakti in life, describing the characteristics of four types of devotees based on the *Gyan-Yoga* chapter of the Gita.

5. 'योग' शब्द को स्पष्ट करते हुए चित्तवृत्तिनिरोध के उपायों का वर्णन कीजिए।

Explaining the word 'Yoga' describe the solutions for *Chittavrittinirodha*.

6. योग दर्शन में प्रतिपादित अष्टांग-योग के महत्त्व का वर्णन कीजिए।

Describe the importance of *Aṣṭāṅga-yoga* as mentioned in Yoga Philosophy.